Vol 4 Issue 7 April 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra
Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research ISSN : 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume-4 | Issue-7 | April-2015 Available online at www.ror.isrj.org

राष्ट्रकवि दिनकर की कविताओ में गांधीवादी विचार

जे. आर पांडेय
कला शाखा– हिंदी विभाग द. ग. तटकरे महाविद्यालय माणगांव – रायगड

Co-Author Details :

कौशीका शहा (T.Y.B.A) , *कमल गुगले* (T.Y.B.A)
कला शाखा– हिंदी विभाग द. ग. तटकरे महाविद्यालय माणगांव – रायगड

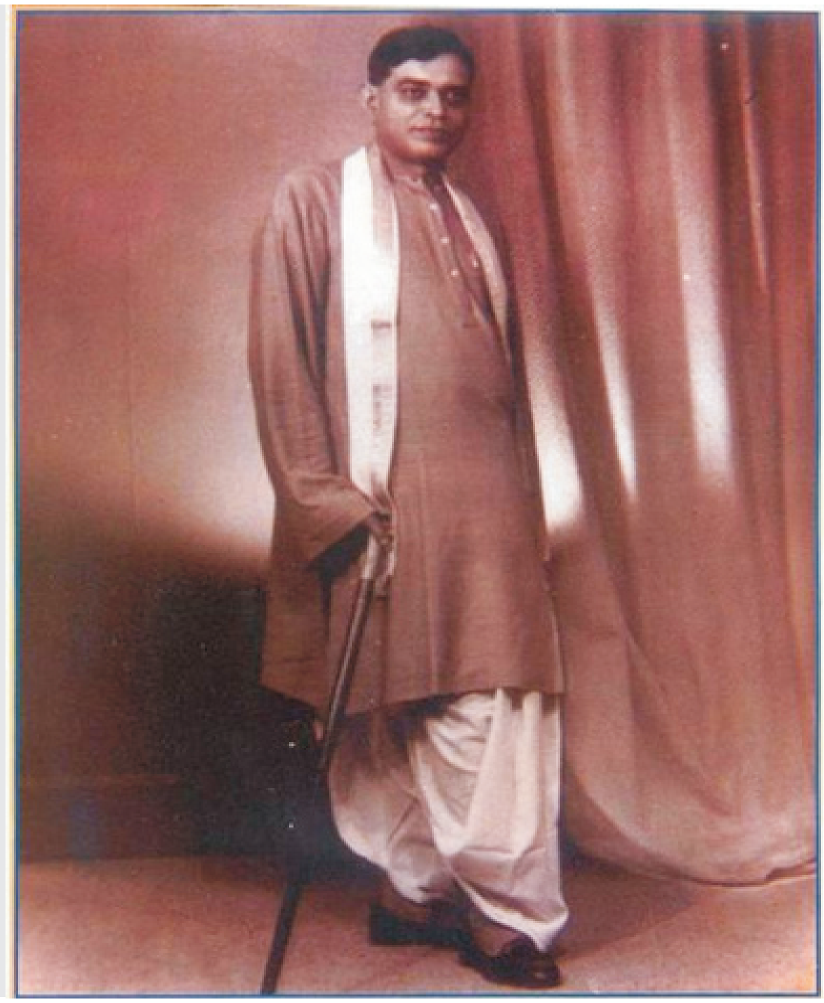

प्रस्तावना :

भारत में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सिम्बर 1908 ई. में बिहार राज्य के बेगुसराय जिले के सिमरिया घाट गाव में हुआ था । पटना विश्वविदयालय से बी.ए.की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विदयालय में अध्यापन कार्य करने लगे । 1934 से 1947 तक वे बिहार सरकार की सेवा में सब रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदो पर कार्य किया। 1950 से 1952 तक मुजफ्फरपुर कालेज में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे। भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर भी कार्य किया और फिर बाद में भारत सरकार के हिन्दी सलाहकर बने। 1952 में जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया । वे 12 वर्षो तक राज्यसभा के सदस्य रहे ।

शुरुवाती दौर में जब दिनकर कविताये लिखते थे तो वे कवितायें राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत थी। अंग्रेजी सरकार को लगा कि वे गलत आदमी को नियुक्त कर दिया है । फिर क्या था, सरकार दिनकर जीके पीछे पड गयी, बात–बात में चेतावनी मिलने लगी, तबादले होने लगे । करीब चार वर्ष में बाईस बार इनका तबादला किया गया । इनकी मृत्यू 24 अप्रैल 1974 को मद्रस में हुई । दिनकर सच्चे अर्थो में गांधीवादी लेखक, कवि थे । उनकी कविताओं में गांधी

दर्शन को जगह–जगह पर देखा जा सकता है । दिनकर गांधी जी को अपना राजनैनिक गुरु मानते थे ।

2. रचनाकार के रुप में दिनकर –

दिनकर जी स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रुप में स्थापित हुये और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रकवि के नाम से जाने गये । एक ओर उनकी कविताओं में आज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है, तो दूसरी तरफ कोमलभावनाये भी व्यक्त हुई है । दोनो ही भावो का चरम उत्कर्ष कुरुक्षेत्र और उर्वशी में देखने को मिलता है । इनकी प्रमुख रचनायें है –कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, हुंकार, संस्कृति के चार अध्याय, परशुराम की प्रतिक्षा, हाहाकार, चक्रव्यूह, आत्मजयी, वाजश्रवा के बहाने इत्यादी । उर्वशी को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार 1972 में मिला संस्कृति के चार अध्याय के लिये 1959 में साहित्य अकादमीपुरस्कार मिला । उनकी रचना कुरुक्षेत्र को विश्व की 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यो में 74 वॉ स्थान मिला है ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इनके बारे में कहा है कि गैर हिंदी भाषियो के बीच दिनकर जीसबसे ज्यादा लोकप्रिय थे । हरिवंशराय बचचन जी ने कहा कि दिनकर जी को एक नही बल्कि गदय, पदय, भाषा और हिन्दी सेवा के लिये अलग –अलग चार ज्ञानपीठ पुरस्कार दिये जाने चाहिये । दिनकर जी को 1959 में पदम विभूषण से सन्मानित किया गया। भारत सरकार ने 1999 ई. में उनकी स्मृति में डाक टिकट भी जारी किया ।

3. करघा कविता और दिनकर :–

दिनकर जी की एक प्रसिध्द कविता करघ है। जैसा कि हम जानते है कि गांधीजी के जीवन मे करघा का क्या महत्व है । वे करघे को स्वालंबन का प्रतीक मानते है।गांधीजी कहते है थे जो बुने वह पहनें जो पहने वह बुने । शायद दिनकर जी करघे के महत्व को पहचानते थे ।

श्हर जिन्दगी कही न कही
दूसरी जिन्दगी से टकराती है ।
हर जिन्दगी किसी न किसी
जिंदगी से मिल कर एक हो जाती है ।"

दिनकर की जिन्दगी कई जगहो पर दूसरो से मिलती है । लोग अपने जिंदगी को झमेला कहकर भागते है । संसार को बेवकूफो का मेला कहते है । लेकिन दिनकरजी का कहना है हर जिंदगी एक सूत की तरह है । और दुनिया उलझे सूतो का जाल है । इन उलझे सूतो को सुलझाने में ही सब परेशान है । जो सुलझा सकता है वही आदमी जीवन में सफल है ।

जो करघे का अनुभव रखता है वह हर सूत की किस्मत पहचानता है । यहॉ सूत इंसान है । कुछ लोग टेढे–मेढे चलने को आदी होते है, इनका रहस्य बुनकर ही जानता है । महात्मा गांधी भी ऐसे ही थे जिन्होंने अंग्रेजो के टेढे रास्ते को जान गये थे । अपने अंहिसा के सीधे मार्ग से उन्हें भारत से भगाकर ही छोडा । इसीलिये दिनकरजी जीवन में करघा के महत्व को स्विकार करते है ।

4. भारत कविता और दिनकर :–

रामधारी सिंह दिनकर जी की दूसरी प्रसिध्द कविता भारत है । इस कविता में दिनकरजी एकदम अलग तरीके से अपनी बात रखते है । एक तरफ तो वे नित नये ज्ञान को सीखने को कहते है तो दूसरी तरफ आग लगने पर गहरी समाधि में रम जाने की बात कहते है । इस कविता में कामचोरो की अच्छी खबर दिनकर जी ने लिया है । गांधीजी का कामचोरो, उददेश्यहीन लोगो से सख्त नफरत था । दिनकर के अंदर भी यही भाव है । वे ऐसे लोगो पर व्यंग्य लिखते है ।

"गांधी को उल्टा घिसो और जो धूल झरें,
उसके प्रलेप से अपनी कुण्ठा के मुखपर,
ऐसी नक्काशी गढो कि जो देखे, बोले,
आखिर, बापू भी और बात क्या कहते थे ।"

आजादी के बाद देश की हालत क्या होती है इस कविता से समझा जा सकता है । वे भारतवासियो से कहते है कि तुम कितने नीचे गिर गये हो, अभी इसके नीचे कुछ भी नही है ।एक पूरा देश पाताल में चला गया और तुम अभी तक प्यासी धरती के लिये अमृत लाने गये हो । हमे देश के बारे में ईमानदारी से बैठकर सोचना पडेगा ।

5. संसार पूजता जिन्हे कविता और दिनकर :–

प्रस्तुत कविता में दिनकर जी ने महात्मा गॉधी की स्तुति करते दिखायी देते है । गॉधीजी उन्हे इतने बडे दिखायी देते है कि कवि उन तक पहुँच नही पाता है । दिनकर लिखते है ।

संसार पूजता जिन्हे तिलक,
रोली, फूला के हार से,
मै उन्हें पूजने आया हूँ,
बापू ! कब तक ॲगारो से ।

अंगार तो आभूषण उन्ही का हो सकता है जो विद्युत को पीने में सक्षम होगे । गांधीजी ने ऐसे लोगो के तेज को नष्ट किया जिनकी रोशनी से लोगो केस कट जाते थे। गांधीजी जे जनता को आदेश दे देते जनता उधर झुक जाती है । गॉधीजी ने सदियो तक जलती चली आ रही आग को बुझा दिया। गॉधीजी के तेज में कोमलता थी । बापूजी मर्त्य, अमर्त्य, स्वर्ग–पृथ्वी धरती, नभ के महासेतु थे । गॉधीजी का व्यक्तित्व बहुत महान, विशाल थीं । कवि उनके बारे में जितना कुछ कहें कम ही है । कवि अपने अंगारो से बापूजी का सन्मान करना चाहता है । गांधीजी का कर्त्तृत्व, व्यक्तित्व इतना उपर उठा हुआ है कि वह मस्तक तक कैसे पहुंचे वह वामन रुपी गॉधीजी का पूजा कैसे करे जिनका मस्तक आसमान से भी ऊँचा है । गांधीजी मानव के विराट किरीट है । यह कविता गांधीजी को समर्पित है ।

6. गॉधी कविता और दिनकरः–

गांधी कविता भी दिनकर की एक ऐसी कविता है जिसमें कवि गॉधी की महानता को व्यक्त करके अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है । कवि पहले सोचता था कि वह देश में क्रान्ति के लिये गरजा है । उसकी गर्जन पर सब जागे हैं लेकिन उसे बाद में पता चलता है कि वह तो गांधी जी का गर्जन था ।

सोचता हूँ,मै कब गरजा था
जिसे लोग मेरा गर्जन समझते है,
वह असल मे गॉधी का था,
उस गॉधी का था, जिसने हमे जन्म दिया था ।

आंदोलन के समय लोगो ने गांधी को देखा था उनके तुफान को नही । कवि लोगो को तूफान की तरह गरजने को कहता है । लेकिन उनके तूफान की आवाज महीन होना चाहिये । उस तूफान से मोम का दिपक भी नही बुझना चाहिये । गांधीजी के बारे में कवि अंत मे लिखता है ।

गांधी तूफान के पिता
और बाजो के भी बाज थे,
क्योंकि वे नीरवता की आवाज थे ।

इस तरह दिनकर गांधी के कार्यो की स्तुतिकरते है । उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते है ।

7. निष्कर्ष :–

रामधारी सिंह दिनकर जी का पूरा व्यक्तित्व गांधी दर्शन से प्रभावित है । वे गांधीदर्शन मे विश्वास रखने वाले कवि, लेखक थे । उनकी रचनाओ में बखूभि के सासथ गांधी तत्व को खोजा जा सकता है। उन्होने सामाजिक और आर्थिक समानता और शोषण के खिलाफ कविताओं की रचना की । उनकी रचना का एक अंश देखिये ।–

क्षमा शोभती उस भुजग को,
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दन्तहीन
विषहीन , विनीत , सरल हो ।

सचमुच. दिनकर जी राष्ट्कवि होने के काबिल थे । इसमे कोई सन्देह नही । उन्होंने कहा कि क्षमा उसी को शोभित होती है जो बडा है । गांधीजी बहुत बडे थे । उन्होंने अहिंसा का मार्ग अपनाया जो कि उनके व्यक्तित्व के अनुकूल था । आज हमें गांधी मार्ग की ज्यादा जरुरत है ।

8. संदर्भ ग्रन्थ :–

1.संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर
2.मेरे सत्य के प्रयोग – महात्मा गांधी
3.आधुनिक कवि – विश्वम्भर मानव रामकिशोर शर्मा
4.आधुनिक कविता का इतिहास – नंदकिशोर नवल
5.नवजीवन हरिजन पत्रो से गांधी विचार
6.दिनकर – सपां सावित्री सिन्हा

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org